रुकोगे नहीं राधिका – राधिका की जीवन संघर्ष

कांतराज .हेच .डि
असिस्टेंट प्रोफेसर
PES IAMS
SHIVAMOGGA.

Article Link: https://aksharasurya.com/2023/06/kantharaj-h-d/

लेखिका उषा प्रियवंदा द्वारा रचित "रुकोगे नहीं राधिका"इस उपन्यास में पाश्चात्य संस्कृति की बीच में राधिका अपनी जीवन निर्वाह किस तरह करती है और भारतीयों की मानसिकता राधिका की ऊपर किस तरह सेगेहरा प्रभाव पड़ता है और उसकी संवेदनशीलता को यह प्रस्तुत उपन्यास दिखाई गई है. स्त्री संबंधी उन भारतीय परंपरा मान्यताओं पर प्रहर करता है जहाँ सदैव ही पुरुष सत्ता के अधिन होने चाहिए भले ही ओ पुरुष पिता, पति, भाई, संतान इसी चिरंतन पुरुषवादी मानसिकता को चूरचूर करते हैं. नायिका राधिका अपने जीवन निर्णय स्वयं लेती हैए क आधुनिक शिक्षित स्त्री के रुप में सदियों से चलते आ रहीहैउन मान्यताओं को तोड़ते हुए जीवन के प्रति एक नवीन दृष्टि कोण अपनाती है.

हमें जीवन केलिए देश या विदेश में काम करना पड़ता है अपने जीवनमूल्यों मान्यताओं के साथ हमें समझोता करना पड़ता है, कहीं बार वह के संस्कृति को अपनाना पड़ता है अपनाते अपनाते पाश्चात्य संस्कृति में पूरी तरह डूब जाते है कुछ समय के बाद फिर भारतीय संस्कृति में आनादिखाई देते है उसमें बहुत सारे अवरोध उत्पन्न होते दिखाई देते है .इसी आधार को लेकर लेखिका ने अपने उपन्यास के माध्यम से स्त्री की जो अनुभव है, समाज में बदलते हुए रिश्तों की जो स्थार है किस तरह से तलमेल बिठाना बड़ा ही मुश्किल काम हो जाता है रिश्तों में बढ़ती खटास जीने नहीं देती राधिका आंरभ में जीतने संबंधों की प्रति अपनी निष्ठा अभिव्यक्त करते दिखाई देती है उतन ही दूरीए कत रह से अपनाते हुए दिखाई देती है. प्रियवंदा जीए कऐसे लड़की का चित्रण किया है जो केवल उलझकर सही ग़लत का निर्णय लेने में असमर्थ दिखाई देती है. पिता से संबंध बिगड़ जाने के वातावरण या जीस परिवेश में रहाती है उस से वह भागती फिरती टुटती कटती दिखाई देती. माध्यम वर्ग की परिवार में जन्मी राधिका का जीवन में एकांकीपन, माँ की मृत्यु, पिता दूसरी शादी करने का निर्णय उसकी आत्मा विश्वास को तोड़ दृडालत है. उनके पिता विद्या नाम की स्त्री से विवाह किया, राधिका विद्या के प्रति आँख उठकर भी नही देखती अब राधिका पिता को दुःख

पहुंचाने का एक भी मौका नही छोड़ती उनसे बदला लेने के लिए अपने उम्र से दुगनी आयु के डैनियल, पीटरसन के साथ वाक्त बिताने लगी] और उस उत्पन्न होने के स्थिति अनेक प्रकार की प्रतिक्रिया है वह पर होते दिखाई देते है [हम देखते है हमारे मन में अनेक प्रकार की कुठाएँ है पनपनते लगते है तो वह अनेक प्रयास करने लगती है पीटरसन के साथ वाक्त बिताने लगी क्यों कि हम देखते हैं जब घर की स्थिति तोड़ बदलने आति अनेक प्रकार के जो समस्या उत्पन्न होने शुरू होती है और उस उत्पन्न होने के स्थिति अनेक प्रकार की प्रतिक्रिया है वह पर होते दिखाई देते है हम देखते है हमारे मन में अनेक प्रकार की कुठाएँ है जब कुठाएँ पनपनने लगते है तो वह अनेक प्रयास करने लगती है दूसरो को दुखी करने सताने के लिए याए`सी स्थितियाँ उत्पन्न होती है जो व्यक्ति के आवेश के या क्रोध के कारणए`सा बोल जाते है अनेक प्रकार की स्थिति पनपननती हुई दिखाई देते और पिता उठने से पहले चलीजाना पिता को राधिका की ये हरकतें परेशान और व्याकुल कर रही थी राधिका का ज्यादा से ज्यादा समय केवल डैनियल के साथ ही बीताती थी डैन की सहानुभूति चाहती है.

यह सहानुभूति कई अर्थ में अभिव्यक्त होते हुए दिखाई देता है डैन राधिका को वास्तविकता का एहसास कराता है राधिका का रवैया, व्यवहार वे भी बदलते हुए दिखाई देती है राधिका मैं तूम्हें जातने की कोशिश ना ही कर रहा हूँ तुमने ही अपने बनाई दुःख की ढ़ेरों में अपने आपको बदलिया है ठिक है पिता ने दूसरी शादी करलिया तूम भी इन सीम से बहार निकलो दुनिया देखो अपनी संभावनाओं को विकसित करों इस तरह समझाया उस का बात राधिका पर कोई असर नही पड़ राधिका अपने पिता को परिशन करने के लिए डैन के साथ विदेश जाने का फैसला करती है पिता इसका विरोध करते हैं राधिका अपने ऊपर से डैनियल के साथ विदेश चले जाती है, विदेश जाने के बाद राधिका अपना मन स्थिर नही कर पाती वह अनेक प्रकार का विचार उनकी मन में आते हैं पिता और भारत की यादे उसे परिशान करती है. उषा जी अमेरिका की स्त्री पुरुषो के खुले संबंधों के चर्चा करते हैं दूसरी ओर उन संबंधों के अस्थिरता अकेलापन सन्तरस को बेखूबी उजागर करते हैं उदाहरण के लिए मानिष एक वर्ष में कई लड़कियों के साथ मित्रता राधिका देख चूकी थी. दरसल वह की जीवन शैली में "यह रिजक्शन नही है यह मुक्ति की अवधारणा है "राधिका को अपने साथ रखने के पश्चात डैन राधिका से कहते है "मैं तुम्हें रिजेक्ट नहीं कर रहा हूँ बल्कि तूम्हें मुक्त कर रहा हूँ" स्त्री मुक्ति उसके भटकव अकेलपन सन्तरस, अजनबी घुटन अस्वीकार आदि स्त्री जीवन की तमाम त्रसदी के साथ साथ उषा प्रियवंदा प्रस्तुत उपन्यास में एक

कुशल समाज शास्त्रीयों की भंति इस के मूल में जाकर भारतीय समाज व्यवस्था के उन कारणों को खोज करती है. जो आज की युवा पीढ़ी को पाश्चात्य चकचौध के और ढकेलते है. विदेश में राधिका की शिक्षा पूर्ण हुआ अब ओ चहाती है पुनः भारत लौटना और अपने पिता के साथ रहने का निर्णय लिया और भारत लौट आती है यह पर अक्षय का परिचय हुआ इतने वर्षों के बाद राधिका दुबारा भारतीय परिवेश में अपना समजस बिठाने की बहुत कोशिश की, परंतु उन प्रयास पूर्णतह असफल होती हुई दिखाई दिया राधिका अपने और डैन के संबंधों को भुलने के लिए कभी अक्षय के निकट जाती थी परन्तु संबंधों में आध – अधूरा होने के कारण अपने विचारों को नई उड़ान देने के चक्कर में मनिष के निकट जाती है वह भी दूरिया खडवहट असमर्थ असुरक्ष का भाव दिखाई देता है इतने पुरुषों के साथ रहने के बाद भी राधिका किसी भी प्रकार का वैवाहिक बंधन में नहीं बांधान चहाती थी ना ही पिता द्वारा बनाई गई संबंध में बांधान चाहती थी सदियों से चलती आ रही उन तमाम भेड़ियों को तोड़ते हुए एक उन्मुक्त स्त्री के रुप में दिखाई दे रही है. विमाता के मृत्यु के पश्चात राधिका को दुबारा पिता से जुड़ने का मौका मिलता है इस अवसर का लाभ न उठाते हुए वे पिता के पास न जाकर मनिष के पास जाने का निर्णय लेती है कुछ समय के बाद मनिषा विवाह प्रस्ताव को राधिका के पास रखता है राधिका कुलकर मनिषा को समझती है "तूम बारबार विवाह की बात क्यों छेड़ देती हो अभी विवाह के मूड में नहीं हूँ"

हमारे युवा वर्ग न पड़ने को तैयार है न ही यह रहकर काम करना चाहत है उदहारणः

मेरे कालेज में आगे ल्याब नही है एक स्कूटर खारिदने के लिए वर्षों का इन्तज़ार करना पड़ेगा, मेरा वेतन इतन नहीं मेरे देश में मेरे लिए आखिर क्या है उषा जी भारत की इन सभी मध्यवर्गीय नौकरी करनेवाले व्यक्ति की आर्थिक स्थिति दर्शाती है दूसरी ओर अमेरिका समाज की चमकधमक दोनों में जमिन और असमान का अंतर है प्रतिभा पलायन की मुख्य कारण है संबंधों की कमी, अवसरों की कमी, बेरोजगारी,गरिबी, भूख बड़े बड़े स्लम, मातृभाषा में शिक्षा ना होना अनेक कारण पर उषाजी अपनी पैनी दृष्टि रखती है. निःसंदेह उषाजी प्रस्तुत उपन्यास में आधुनिक समाज में स्त्री के स्वातंन्त्र अस्तित्व खोज तो करता ही है. भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति की टकराहटए या पाश्चात्य मूल्यों के प्रति आकर्षण तो ही एक समाज शास्त्रीय विश्लेषणत्मक दृष्टिकोण भी मिलता है. इस तरह उपन्यास आधुनिक जीवनए या समाज के अनेक नए आयामों को सशक्त रुपमें उद्घाटित करता है.

उपन्यास को विश्लेषण करते हुए हमें पता चलता है आज की युवा पीढ़ी उद्योग ,धन, सम्मान, अवसर की खोज में विदेश चलेजाते है वह की सुख–सुविधा, आकर्षण में खोजाते है किन्तु मन से पूर्ण रुप में भारतीय होने के कारण विदेश के संस्कारों को पूरी तरह ना अपनाते किंतु दोहरी जिंदगी जीने की आश रखते हैं. उपन्यास भारतीयों की मानसिकता में गहरे उतरकर बड़ी ही संवेदनशीलता से उनके असमंजस को पकड़ने का सार्थक प्रयास करता है, कुछ साल विदेश रहकर भारत लौटना मुश्किल है या लौटना संभव नहीं है पर वे यह भी जानते है ना सुख वह था ना सुख यह है स्वदेश में अनिश्चित साथ हीनता का यहसास वापसी पर परिवार के बीच होनेवाले कड़वाहट अनुभवए क विषैला सा स्वाद छोड़ते है. ये उपन्यास अकेली स्त्री की अनुभावों को ही नहीं आधुनिक समाज में बदलते रिश्ते प्रकृति से तालमेल न बिठानेवाले अनेक व्यक्तियों और संबंधों की भारिक सी पड़ताल भी करता है.

प्रस्तुत उपन्यास में आज की नारी या जीवन की विसंगतियों को उन्होंने (लेखिका) बड़ी गहनता से आत्मसात किया है ।परिवर्तित संदर्भों, नई परिस्थितियों तथा उलझनपूर्ण मनः स्थितियों में नारी के मिसफिट होने की प्रवृत्ति और आधुनिकता तथा भारतीय संस्कारों के मध्य सूक्ष्म द्वन्द्व को उन्होंने उपन्यास "रुकोगे नहीं राधिका" आदि से अन्त तक हर परिस्थिति में अपने अस्तित्व के लिए सचेत दिखाई गई । आधुनिक संवेदना के धरातल पर नारी आज भी कितनी विवश है. इसका सही आभास इस में मिलता है।